

अभिमिन और अहंकार

रेटगि:

वविरण: ?????? ?? ?????? ??? ?????? ?????? ?? ?????????? ?????? ?? ?????? ??? ??????

श्रेणी: [पाठ](#) > [बढ़ती आस्था](#) > [आत्म शुद्धि](#)

द्वारा: Aisha Stacey (© 2015 IslamReligion.com)

प्रकाशति हुआ: 08 Nov 2022

अंतमि बार संशोधति: 07 Nov 2022

उददेश्य:

- अरबी शब्द कबिर का अर्थ समझना और यह अहंकार और अभिमिन से कैसे संबंधति है।
- अपने जीवन से अभिमिन और अहंकार को दूर करने के सरल तरीके खोजना

अरबी शब्द:

- ????? - यह इस्लाम और अरबी भाषा में इस्तेमाल कयिा जाने वाला शब्द है जो शैतान यानि बुराई की पहचान को दर्शाता है।
- ????? - अहंकार, अभिमिन, घमंड, या अकड़।
- ??????? - यह संसार, परलोक के संसार के वपिरीत।
- ????? - "सहाबी" का बहुवचन, जसिका अर्थ है पैगंबर के साथी। एक सहाबी, जैसा क आज आमतौर पर इस शब्द का प्रयोग कयिा जाता है, वह है जसिने पैगंबर मुहम्मद को देखा, उन पर वशिवास कयिा और एक मुसलमान के रूप में मर गया।
- ??????? - शैतान का अरबी नाम।
- ????? - भोजन या जीवकि। कसीं व्यक्ति के नरिवाह और आजीवकि के सभी पहलू रजिक की परभिषा के अंतर्गत आते हैं, इसमे अन्य चीजों के साथ-साथ धन और हैसयित भी शामिल है।
- ??? - याचना, प्रार्थना, अल्लाह से कुछ मांगना।

अभिमिन और अहंकार करने वाला पहला व्यक्ति शैतान था या इब्लीस जैसा कि उसे अक्सर आदम की कहानी में बुलाया जाता है। वह घमंड और अहंकार से भर गया क्योंकि उसने सोचा कि वह आदम से बेहतर है। वह खुद को श्रेष्ठ महसूस करता था।



“...फरि हमने स्वर्गदूतों से कहा कि आदम को सज्दा करो, तो इब्लीस के सवाि सबने सज्दा किया। वह सज्दा करने वालों में से न हुआ। अल्लाह ने उससे कहा: कसि बात ने तुझे सज्दा करने से रोक दिया, जबकि मैंने तुझे आदेश दिया था? उसने कहा: मैं उससे उत्तम हूँ। मेरी रचना तुने अग्निसे की है और उसकी मट्टी से।” (कुरआन 7:11-12)

श्रेष्ठता की वह भावना ही समस्त अभिमिन और अहंकार का मूल है। मैं आपसे बेहतर हूँ, मैं अधिक पैसा कमाता हूँ, मेरा घर बड़ा है, मेरी बुद्धि अधिक है, मैंने अधिक यात्रा की है, मेरी ताकत ज्यादा है, मैं अधिक स्वादष्टि भोजन बनाता हूँ; यह सूची बहुत लंबी है। कोई चीज़ जिसमें हम श्रेष्ठ महसूस करते हैं, उनमें एक समानता है कि वे लगभग अनन्य रूप से दुनिया के मामलों से संबंधित हैं। दुनिया और उसकी सभी चीज़ों से प्यार वास्तव में हमें स्वर्ग से और दूर ले जाते हैं। दुनिया के मानकों से श्रेष्ठ होना या दखिना एक मदद से ज्यादा एक बाधा हो सकता है। यह हमारी ईश्वर चेतना है जो फर्क करती है; उस संबंध में श्रेष्ठ होना ही एकमात्र श्रेष्ठता है जो मायने रखती है।

आप अधिक पैसा कमा सकते हैं, लेकिन क्या आपने इसे अल्लाह को खुश करने के लिए खर्च किया? आप स्वादष्टि भोजन तो बनाते हैं लेकिन क्या आपने गरीबों को खलाया? यदि आप हां में उत्तर देते हैं और आपको अपनी उपलब्धियों पर गर्व है तो यह अभिमिन और अहंकार नहीं है जिसका अरबी शब्द कबिर (अस्वस्थ और अनावश्यक अभिमिन और अहंकार) है। इस्लाम नवाचार और उपलब्धियों के खिलाफ नहीं है, यह उत्कृष्टता और सफलता को पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है, और इस प्रकार प्रेरणा, इनाम की इच्छा और यहां तक कि पहचाने जाने की इच्छा भी पाप नहीं हैं। गलत इरादे से काम करना पाप है। जबकि अल्लाह की खातिर और मानवता की सेवा करना सही इरादा है, आत्म-प्राप्तियाँ आत्म-प्रेम के लिए कुछ करना गलत इरादा है। अपनी उन जरूरतों और इच्छाओं को पूरा करना जो दुनिया में आपको लाभ पहुंचाती है कबिर कहलाता है।

कबिर का अनचाहा प्रभाव ये है कि लोग आपको नापसंद करते हैं, यहां तक कि आपसे डरते भी हैं; यह सम्मान छीन लेता है। इसके अलावा और इससे भी बड़ा परिणाम यह है कि यह आपको स्वर्ग में जगह से वंचित कर सकता है। पैगंबर मुहम्मद अक्सर सहाबा को वनिम्रता के महत्व के बारे में सलाह देते थे। उन्होंने कहा, “...जिस किसी के दिल में कबिर सरसों के आधे दाने के बराबर भी होगा, उसे स्वर्ग में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।”

“कहा जायेगा कब्रिवेश कर जाओ नरक के द्वारों में, सदावासी होकर उसमें। तो बुरा है घमंडियों का नवासि स्थान।” (कुरआन 39:72)

कब्रि स्वर्ग में हमारे स्थान को खतरे में डाल देता है क्योंकि यह हमें एक आसक्ति के गुणों को प्राप्त करने से रोकता है। अभिमानी व्यक्ति दूसरों के लिए वह नहीं चाह सकता जो वह अपने लिए चाहता है। न ही वह वनिम्र हो सकता है और न ही ईर्ष्या से बच सकता है। एक अभिमानी व्यक्ति सिलाह मानने से इंकार कर देता है और अक्सर अपने क्रोध या गुस्से को नियंत्रित करने में असमर्थ होता है। हालांकि, एक आसक्ति अपने चरित्र से इन लक्षणों को दूर करने का प्रयास करता है। वह हमेशा अपने व्यवहार के प्रति सचेत रहता है।

पैगम्बर मुहम्मद ने फरमाया कि न्याय के दिन अल्लाह उस शख्स की तरफ नहीं देखेगा जो घमंड से अपना लबादा पीछे की ओर खींच लेता है। पैगम्बर के करीबी विश्वासपात्र अबू बक्र ने तब जवाब दिया, "ऐ अल्लाह के दूत, मेरे लबादे का एक हिस्सा ढीला हो गया है, लेकिन मैं इसके बारे में बहुत सतर्क हूँ (यानी मैं इसे उठाता हूँ)।" पैगम्बर मुहम्मद ने उत्तर दिया, "लेकिन आप ऐसा गर्व से नहीं करते हैं।"^[2] एक बार फिर हम देख सकते हैं कि अभिमान, कब्रि, का व्यवहार इरादे से पैदा होता है।

कब्रि का उपाय, और वह साधन जिसके द्वारा व्यक्ति अभिमान और अहंकार से दूर रह सकता है, उतना ही सरल है जितना कि यह याद रखना कि आप कौन हैं; सिर्फ एक इंसान जिसके मां और बाप हैं, अन्य सभी की तरह। हमारे आंसू एक जैसे हैं और हमारे खून का रंग लाल है। और हम सबका जीवन में एक ही उद्देश्य है; अल्लाह की पूजा करना। हमें खुद को यह भी याद दिलाना चाहिए कि सभी रज़िक् अल्लाह देता है। एक व्यक्ति अधिक पैसा कमा सकता है लेकिन यह अल्लाह ही है जो उसे ऐसा करने का कौशल प्रदान करता है। अन्य व्यक्ति अधिक सुंदर या खूबसूरत हो सकता है, लेकिन यह अल्लाह ही है जिसने उसके जीस की गुणवत्ता निर्धारित की है। जब हम अल्लाह से कुछ विशेष आशीर्वाद प्राप्त करते हैं, तो हमें अल्लाह का आभारी और कृतज्ञ होना चाहिए। इसका एक तरीका यह है कि अल्लाह के उस आशीर्वाद का उपयोग अल्लाह को खुश करने के लिए किया जाये और मानवजातिया इस ग्रह को कोई लाभ पहुंचाने के लिए किया जाये।

कब्रि का एक और उपाय है अल्लाह को याद करना; अल्लाह को अपने दिमाग में रखना, यदासिंभव हो तो हर समय। याद रखें कि अल्लाह सब देखता है, यहां तक कि हिर व्यक्ति के दिलों में क्या है उसे भी देखता है। मुसलमानों को याद रखने का एक तरीका प्राप्त है। हम दिन में पांच बार नमाज़ पढ़ते हैं, हम याद के विशिष्ट शब्दों का उपयोग करते हैं, और हमें दुआ करने और अक्सर अल्लाह को याद करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। हम इन तरीकों का इस्तेमाल अल्लाह के करीब होने, उसकी आज्ञाओं

का पालन करने और उसे खुश करने के लिए करते हैं। ऐसा करने से हम अपने दिलों को इच्छा और लालच के पापों और अपने आस-पास के लोगों से श्रेष्ठ महसूस करने में शामिल पापों से बचाते हैं। यह दुनिया महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमारी अंतिम परीक्षा है; इसलिए नहीं कि इसमें हम अपने सामान और संपत्तिको इकठ्ठा कर सकते हैं। हम अपने बारे में अच्छा महसूस करना चाहते हैं क्योंकि हमने ईश्वर चेतना प्राप्त कर ली है और इसलिए नहीं कि हम अपना रज्जक लेते हैं और अपने आप को यह सोचकर धोखा देते हैं कि हमने इसे स्वयं बनाया है। हमें अपने जीवन में अभिमान और अहंकार के बदले दया और करुणा लाना चाहिए।

फुटनोट:

[1] सहीह मुस्लिमि

[2] सहीह अल-बुखारी और सहीह मुस्लिमि

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/280>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।